शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

राष्ट्रीय वेबीनार विशेषांक

वै.धुंडा महाराज देगलुरकर महाविद्यालय, देगलुर

ISSN-2454-6283 **14 sept.-2022**

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक–डॉ.सुनील जाधव,नांदेड 9405384672

तकनीकी सम्पादक–अनिल जाधव, मुंबई

अतिथि सम्पादक-डॉ.अभिमन्यु पाटील/डॉ.पुष्पा गायकवाड़

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

अनुक्रमणिका

संपादकीय 10

–डॉ.अभिमन्यु नरसिंगराव पाटील 10

1.मानस भवन में आर्यजन..11

–डॉ.श्रीराम परिहार..11

2.भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों में राष्ट्रबोध और युग–चेतना..14

–डॉ.राहुल मिश्र..14

3.भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी कविता का योगदान..17

–प्रोफे.संजय जाधव 17

4.भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 22

–डॉ. परविंदर कौर महाजन(कोल्हापुरे)..22

5.राष्ट्र को अर्पित भारतीय दलित वीरांगनाओं का शौर्य..25

–प्रो.डॉ.प्रतिभा जी.येरेकार..25

6.'स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता' 29

–कैप्टन डॉ.प्रो.अनिता मधुकरराव शिंदे..29

7.उर्वशी काव्य में मानव हित का प्रयोजन..32

–प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे..32

8.माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना..35

–प्रा.डी.आर. भुरे..35

9.स्वाधीनता संघर्ष में पत्र–पत्रिकाओं का भूमिका..37

–डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ..37

10.देश हम जलने न देंगे : राष्ट्रीय अस्मिता की धरोहर 40

–डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी..40

11.भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और नागार्जुन का काव्य 42

–प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे..42

12.स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य 44

–प्रा.डॉ.जाधव के.के..44

13.स्वाधीनता आंदोलन और निराला का काव्य 47

–डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव..47

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded

7.उर्वशी काव्य में मानव हित का प्रयोजन

–प्रा.डॉ.पी.एम.भुमरे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर, बिलोली नांदेड़

जिसमें सहजता से मानव ह्रदय की भावनाओं का अविष्कार होता है, वह काव्य कहलाता है। यद्यपि मन के भावों का प्रस्फुटन काव्य के साथ ही साथ अन्य विधाओं में भी होता है। परंतु जन–मानस की आकांक्षाओं और इच्छाओं के अभिव्यक्ति के लिए काव्य सहज एवं सरल माध्यम है। जन–मानस के ह्रदय की भावनाओं का प्रस्फुटन बिना किसी भय या संकोच से जिसमे होता है, वह काव्य ही एक उत्तम साधन है। कवि अपने–अपने मन के उद्विग्न भाव शब्दो के रूप में प्रस्फुटित करता है तो, गायक शब्दों को गाकर शब्द रूपी वेदना की अभिव्यक्ति करता है। युगों–युगों तक कवि और कविता का गौरव होता है जिसमे, जनमानस के ह्रदय की पीड़ा हो या खुशी सहजता से व्यक्त होती है। इस आयाम की दृष्टि से विचार किया जाए तो भारतीय जन–मानस में ऐसे कवि हुए, जिन्होंने जन–मानस को झकझोर दिया। जनमानस की पीड़ा युगीन आक्रोश को लेकर कविताएँ लिखी गई। जिसमें रामधारीसिंह दिनकर की कविता में जन–मानस का आक्रोश अभिव्यक्त हुआ है। इस दृष्टि से दिनकर जन–मानस के कवि है।

रामधारीसिंह दिनकर का परिचय : युगों से चले आ रहे समाज में आज भी असमानता, विसंगति और विद्रूपता बढ़ी हुई है। सामाजिक, धार्मिक और वैयक्तिक स्तर पर स्वार्थ वृत्ति ने मनुष्य को संकुचित बना दिया है। ऐसी परिस्थिति में उर्वशी इस काव्य के रचयिता श्री रामधारीसिंह दिनकर काव्य के माध्यम से मनुष्य और मानवता की महत्व देते है। मानव हित में जो है उसका महाकाव्य के मध्यम से समर्थन करते है। उर्वशी यह महाकाव्य मनुष्य को युगीन संदेश देता है। इसमें मानव कल्याण का पथ प्रदर्शन किया है। श्री रामधारीसिंह दिनकर आक्रोश की ध्वनि को मुखरित करने वाले एक युग कवि है। इनकी कविताओं में मानव हित का पथ प्रदर्शन किया है। ऐसे पथ प्रदर्शक कवि श्री रामधारीसिंह दिनकर का जन्म बिहार राज्य के मुंगेर घाट जिले में स्थित सिमरिया नामक गाँव में 23 सितम्बर 1908 में हुआ। इनका पालन–पोषण एक निम्न किसान परिवार में हुआ। इनके पिता रविसिंह एक सामान्य किसान थे। खेती पर अपने परिवार की उपजीविका चलाते थे। परंतु स्वभाव से सरल उदार एवं परहितकारी थे। इनकी माता का नाम मनरूप देवी था। जो अशिक्षित होते हुए भी परिश्रमी, इमानदार और साहसीक थी। दिनकर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सदैव माता ने प्रोत्साहन बढ़ाया। दिनकर जी की प्राथमिक शिक्षा गाँव में हुई। शिक्षा के साथ ही साथ असहयोग आंदोलन में भी वे सहभागी हुए। कालांतर में दिनकर को जीवन में कई अवरोधों से गुजरना पड़ा। कविवर दिनकर का संपूर्ण जीवन क्रम देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि, उन्हें अंतः बाह्य प्रकार के दोनों स्तरों पर संघर्षो से जुझना पड़ा है। उनके साहित्यिक योगदान के लिए 1973 में ज्ञानपीठ पुरस्कार उन्हें प्रदान किया गया। अंततः 24 अप्रैल 1974 में उनकी मृत्यु हुई। दिनकर के व्यक्तित्व में कर्म के प्रति आस्था, आत्मविश्वास और आशावाद जैसे गुण थे। यही आशावाद उनके काव्य के माध्यम से प्रस्फुटित हुआ। उनके अनुसार शांति और मानव कल्याण के लिए व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा आवश्यक है। गांधीवाद पर दिनकर की श्रद्धा थी परंतु वे अहिंसा के समर्थक नही थे। उनके मतानुसार शक्ति, दर्प और संपन्नता भी आवश्यक है। स्व–विकास और अखण्डित स्वतंत्रता के लिए विश्व बंधुत्व की भावना भी आवश्यक है। उनके काव्य में मानवतावाद का जो समर्थन किया है। उसमें मनुष्य का हित सर्वोपरि है। दिनकर जी को शोषक शासकों के प्रति प्रचंड घृणा थी, इसी कारण उनके काव्य में भी वे मानव कल्याण को सर्वोपरि महत्व देते है। स्वावलम्बन और राष्ट्र उनकी समूची साधना के केंद्र में था। दिनकर जी मानवता और राष्ट्र के प्रति समर्पित थे। कविताओं में यही राष्ट्रीयता का भाव प्रमुखता से मुखरित हुआ है। उन्होंने राजशाही पूंजीवादी मानसिकता का विरोध अत्याचार और शोषण के विरुद्ध उन्होंने शंखनाद बजाया था। वे कहते है कि, "यदी देश धर्म के विरुद्ध भगवान भी आये, तो है धर्म उनसे भी युद्ध करना।"1

दिनकर जी अन्याय, अत्याचार के विरूद्ध आक्रोश व्यक्त करते हुए युद्ध से नही डरते शांति प्रस्थापित करने हेतु वे युद्ध का पुरस्कार भी करते है। वे युद्ध के दुष्परिणामों से परिचित है। इसलिए मानव हित के लिए केवल शांति का पथ ही सर्वोपरि है, समर्थन करते है। दिनकर अपने काव्य में राष्ट्रीयता के संयमित मानवीय तत्वों का गुणगान गाते है। एक तरफ युद्ध का समर्थन और दूसरी ओर युद्ध से होने वाले दुष्परिणामों को भी वे हमें परिचित कराते है। समाज में जो विषमता है, उन्हें कदापि मान्य नही है। वैषम्य मुलक सामाजिक रचना से राष्ट्र हित नही होगा इससे वे परिचित थे। वे कहते है कि, " जाति–जाति का शोर मचाते केवल कायर क्रूर,पाते है सम्मान तपोबल से धरती पर शुर।"2 इस प्रकार दिनकर जातिवाद, ढ़ोंगापन, कृत्रिमता की भत्सर्ना करते है। जातीय मानसिकता की वे कठोर शब्दों में भत्सर्ना करते है। श्री रामधारी सिंह दिनकर हिंदी के महाकवि है। जिनका साहित्य सामाजिक भाव से समर्पित है। काव्य के अलावा अन्य विधाओं में भी उनका साहित्य प्रचुर मात्रा में प्रचलित है। परंतु अन्य विधाओं की अपेक्षा उन्हें काव्य के क्षेत्र में विशेष ख्याति प्राप्त हुई।

उनके द्वारा लिखित उर्वशी यह गीतिनाट्य रचना है। इस काव्य कि, रचना 1961 में हुई।इस काव्य कि, लोकप्रियता, इतनी बढ़ी की इसे भारत सरकार ने 1972 में साहित्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार ज्ञानपीठ से सन्मानित किया। कवि द्वारा इनके कृति में गहनता और मार्मिकता का शब्द रूप मुखरित हुआ है। प्राचीन युग से आधुनिक युगीन तक का सूत्रपात उसमें हुआ है। आदर्श एवं स्वस्थ काम जीवन का संदेश, नारी–जीवन की प्रतिष्ठापना साथ ही साथ दमित भावनाओं का आत्मिक विकास की ओर उन्नयन करना यही

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar

वर्णित भाव इस महाकाव्य में अभिव्यक्त हुआ है। इस महाकाव्य में मुख्य पात्रों की भूमिका में पुरुरवा और औशीनरी इनकी कथा सहायक है। प्रसंगानुरूप च्यवन और सुकन्या की कथा भी प्रचलित है। कुल मिलाकर पाँच अंको में कथावस्तु प्रस्तुत हुई है। प्रथम अंक में भू और गगन की वृत्तियों का समन्वय का मिलाप है। इसमें रम्भा, सहजया, मेनका की मुक्त प्रवृत्तियों के रूप में स्त्री दर्शन होते है। स्त्रियों के गुणों की ओर भी संकेत हुआ है। दूसरे अंक में पुरुष के सहनशील रूप का वर्णन है। मदनिका और निपुणिका के द्वारा लाज, मर्यादा का एहसास अभिव्यक्त हुआ है। तीसरे अंक में नारी का सोंदर्य और उसका अनुरूप वर्णन हुआ है। यह सौंदर्य वर्णन केवल बाह्य सौंदर्य से युक्त नही बल्कि आत्मिक सौंदर्य से युक्त भी वर्णित हुआ है। चतुर्थ अंक में नारी की पूर्णता का सूचक है। इस अंक में उर्वशी मानव अवतार में अधिक प्रचलित हुई है। पति–पुत्र में से एक को चुनते समय बढ़ी चुनौति से वर्णन कर लेती है। महाकाव्य का अंतिम अंक एकनिष्ठ पतिवृता स्त्री धर्म का और कर्तव्य का पथप्रदर्शन करता है। इसमें स्त्री की त्याग की भावना, स्त्री प्रेमभाव और स्त्री प्रेरक रूप का पथप्रदर्शक की भूमिका अभिव्यक्त हुई है। इस प्रकार उर्वशी इस महाकाव्य में पात्रों के द्वारा लेखक मानव जीवन में आवश्यक कर्तव्य बोधों से परिचित कराता है। साथ ही साथ अन्याय के विरुद्ध आक्रोश करते हुए न्याय की दिशा निर्धारित की गई है। उर्वशी महाकाव्य के पात्रों में मनुष्य का अपमान भत्सर्ना किसी भी रुप में समझौता नही करते बल्कि समूचे पात्र आक्रोश से युक्त स्वरों में क्रांति का शस्त्र चुनते है। उर्वशी महाकाव्य में मानव हित को सर्वोपरि महत्व दिया गया है। व्यक्ति के सपनों को पूरा करने लिए उनको पूरा विश्वास है। उन्हें पता है कि, मानवीय बुद्धि से ही मानवहित का कल्याण होगा। यही कारण है कि, कभी भी दिनकर के द्वारा निराशा को महत्व नही दिया गया उन्होंने उल्लास भरे शब्द रूपों में जीवन जीने का संदेश भी दिया है। उर्वशी महाकाव्य में मानव हित के लिए कई प्रयोजन भी बताए गए है। इस प्रयोजनों या उर्वशी के संदेशों का निम्न रूप से हम अध्ययन कर सकते है।

काम भोग और योग की स्थिति :–वर्तमान परिस्थिति में भी पुरुष द्विधा मनस्थिति में है। स्वीकार करना कि, त्यागना बहूत बड़ा संभ्रम है। मनुष्य काम से जितना भागेगा उतना वह आकर्षित होता रहेगा। किंतु जीवन में काम का उत्सव हो जाता है, तो वह पूर्णावस्था को प्राप्त करता है। इसे ही धर्मग्रंथ में मोक्ष कहा गया है। हमारी धार्मिकता और आध्यामिक व्यवस्था मनुष्य को चराचर का ज्ञान लेने के लिए आग्रही है परंतु काम की ज्वाला मनुष्य को भोग की ओर उकसाती है। परिणामस्वरूप सत्य और असत्य का भेद करना कठीन हो जाता है। इस महाकाव्य में भी पुरुरवा जो नायक है वह अगोचर में का जितना परिश्रम से चिंतन करता है वह कुछ असाध्य पाना चाहता है। परंतु कुछ प्राप्त नही होता। इसी निराशा के कारण फिर उर्वशी के निकट जाकर आनंद पाना चाहता है। पुरुरवा की स्थिति एक तरफ पाना और खोना ऐसी हो चुकी है। इसी प्रकार औशीनरी से भी उसे समाधान नहीं मिलता फिर उर्वशी के सुंदरता की तरफ आकर्षित होता है। प्रकृति के सानिध्य में रहकर तथा उर्वशी से निकटता स्थापित करते हुए भी उसकी मानसिक भावनाओं का शमन नही होता। कवि ने यही कहा है कि, मनुष्य का मन जितना कुछ पाने के लिए बैचेन करता है, वह प्राप्त होने पर भी दूसरा अचेतन मन अतृप्त रहता है। वर्तमान युगीन जीवन में भागदौड़ से हाथ में कुछ नही आता, जो आया उससे भी आनंद नही है, जो हैं उससे भी अधिक की चाह है। इसीलिए मन की आसक्ति से जो बाहर निकलता है, वही व्यक्ति स्व और परा के दायरे से बाहर निकलकर चिन्मय स्थिति को प्राप्त करता है।

त्याग का जीवन में होना :–हर कोई स्व को ही सर्वस्व मानता है, जो होता नहीं। अजूबा यह है कि, हर कोई व्यक्ति यंत्र की तरह दौड़ता है और भौतिक साधन प्राप्त करने की चेष्टा करता है। प्राप्त होने पर भी यह चेष्टा समाप्त नहीं होती। ईश्वर की ध्यान–धारणा में भी भौतिक साधनों को प्राप्त करने की होड़ लगी है। उर्वशी महाकाव्य में भी पुरुरवा ने स्वंय की बड़ी उन्नति की, राज्यविस्तार, कला कुशलता, निपुणता आदि प्राप्त किया है। यह सब होकर भी पुरुरवा उर्वशी के सानिध्य में, भोग करते हुए जीवन निराशा और उदासीनता के विचार प्रकट करता है। जब उर्वशी पुरुरवा को छोड़कर स्वर्ग पधार जाती है तो पुरुरवा भीषण संघर्ष करना चाहता है। यही आज वर्तमान समाज में भी मनुष्य कर रहा है। व्यक्ति कितना भी धन कमाएँ , साथ कुछ जानेवाला नही है। यही आज के समाज के लिए बहुत बड़ा संदेश है। पुरुरव का ऐश्वर्य रूप है यह भारतीय संस्कृति में त्याग सहित भोग का आदर्श संदेश है।

अनासक्ति और निष्काम कर्म का संदेश :–आज के व्यक्ति के समुख कर्म करने का कोई ना कोई उद्देश रहता है। व्यक्ति के मन में ज्ञान–अज्ञान का संघर्ष हमेशा चलता है। कभी ज्ञान की ज्योति प्रचलित होती है तो अचानक वासना का तिमिर पथ प्रदर्शित होता है। जैसे –"नही इतर इच्छाओं तक ही अनासक्ति सीमित है/ उसका किंचित स्पर्श प्रणय को भी पवित्र करता है।"3 पुरुरवा कभी–कभी दार्शनिक बातें भी करता है। ऐसा करने पर मनुष्य कभी–कभी अधिक सोचता है। मनुष्य का मानसिक संघर्ष हमेशा चलता रहता है। मन की असंतुष्टि का द्वंन्द जो है, उसे भी प्राप्त होने नही देता। जो है उसका आनंद न उठाकर अन्य प्राप्ति का कार्य चिंतन करता है। मन की संतुष्टी बड़ी होती है। असंतोष के कारण ही मन में अस्थिरता और आकुल वृत्ती पनपती है। पुरुरवा की जो स्थिति है, आज वर्तमान के मनुष्य की है।"मैं तुम्हारे रक्त के कण–कण में समाकर/प्रार्थना के गीत गाना चाहता हूँ।"4 मनुष्य अपने पास सबकुछ होकर भी वह दूसरों में सूख ढूँढने की कोशिश करता है। इससे मानसिक विलाप बढ़ जाता है सुख नही मिलता। पुरुरवा जो नही है, उसमें खो जाता है। अदृश्य के प्रति पुरुरवा का आकर्षण खिंच रहा है तो दूसरी ओर आत्मिक स्वर पर उर्वशी उपर उठ रही है। जैसे –"छूट गयी धरती नीचे आभा की झंकारों पर/चढ़े हुए हम देह छोड़कर मन में पहुँच रहे है।"5 पुरुरवा ...

की आसक्ति अधिक है। आसक्ति के उपर उठने की चेष्टा इस महाकाव्य में हुई है। कविने पुरुरवा और औशीनरी के प्रेम में भी सौदर्य की अभिव्यक्ति की है। कवि का उद्देश रहा है कि, आसक्ति से युक्त प्रेम निंदनीय है। कवि का उद्देश रहा है कि, आसक्ति रहित प्रेम और सौंदर्य की पुर्नस्थापना करना यही जीवन का सत्य बताया है। कवि ने निष्काम भाव से जीवन की राह में कर्मरत रहने का संदेश दिया है।

मानव हित विश्वबन्धुत्व की भावना :–उर्वशी महाकाव्य में वर्णित जीवन की कथा लोक सेवा के लिए एक आदर्श व्यवस्था बताई है। उदार, पर दुःख पीड़ा की अनुभूति, सहहृयता आदि गुणों से युक्त मनुष्य ही दूसरों की सेवा के लिए आग्रही रहता है, इसका प्रतिपादन किया है। उर्वशी का विचार मानव हित और विश्वबंधुत्व की भावना को सर्वोपरि महत्व देता है। आज का मनुष्य आत्मा–परमात्मा से अनभिज्ञ है, उसे जानना भी नही चाहता। मानवता और विश्वबंधुत्व के मर्यादा में ही रहना चाहता है। संत कवि कबीर ने भी संयपूर्वक प्रेम को जीवन का आधार बताया। संयमशील गृहस्थ होकर ही पारिवारिक आदर्श स्थापित करने में ही विश्वबंधुत्व है। किसी का भला करने के लिए प्रेमभाव में हठयोगी जैसी तपस्या की जरूरत नही है। पूजा–पठन , वृत वैकल्य , उपवास इससे भी मानव हित का कल्याण नही होगा। मानवहित और विश्वबंधुत्व के लिए केवल निस्वार्थ भाव से कर्म अर्थात निष्काम कर्म प्रेम भाव की जरूरत है। यही उर्वशी इस महाकाव्य का संदेश है।

अध्यात्म और काम का समन्वय :–उर्वशी महाकाव्य में पुरुरवा भूमाता का पुत्र है तो, उर्वशी स्वर्ग देव से प्रकट हुई है। कवि दिनकर काम के विधेय और निषेध काम पक्ष का वर्णन करते है। इस महाकाव्य की कथावस्तु के द्वारा कवि ने यह संदेश दिया है कि, तपस्या साधना की प्राप्ति प्रेम है। प्रेम की महानता एवं भव्यता इसीसे स्थापित होती है। उर्वशी का जो संदेश है, वह भोग और योग पर समन्वित रूप है। कवि ने योग और भोग को माया जीव, मुक्ति जैसे तत्वों की पृष्ठभूमि में उतारे है। पुरूरवा और उर्वशी के द्वारा लौकिक जीवन की प्रस्तुति की है। इसी प्रकार का यह एक सामाजिक संदेश है। उर्वशी की कथा व्यक्तिक होते हुए भी समाज के निकट है। हरि के दर्शन करने के पहले मनुष्य को आत्मदर्शन की आवश्यकता है। जो मनुष्य प्रेम की संवेदना नही जानता, उसके हृदय में प्रेम भाव उत्पन्न नही हुए वह प्रभु के प्रति क्या भाव पहचानेगा ? आत्मदर्शन के लिए जरूरी है कि, काम के आश्रित रहना। आध्यामिकता की सृष्टि प्रेम की प्रेरणा से ही होती है। स्थूलता से होते हुए सूक्ष्मता की ओर बढ़ना ही आध्यामिकता है।

मन की दृढ़ता का संदेश :–मनुष्य जितना बाहर से कठोर दिखाई देता है, वह उतना ही अंदर से कोमल होता है। उर्वशी के तृतीय अंक में मन और वैचारिक प्रेम की व्याख्या पर ही अधिक बल दिया गया है। इसके पूर्व पुरूरवा उर्वशी आनंद स्तर पर केवल अनुभूति की गई है। "जब से हम तुम मिले, न जाने कितने अभिसारों में/रजनी कर श्रृंगार सितासित नभ में घूम चुकी है।" 6 दिनकर ने भोग कर चुके है। निष्काम कर्म के माध्यम से युगीन समस्याओं का हल निकाला है। प्रेम की प्राप्ति में रसात्मकता को कवि आधार बनाते है। जीवन का सत्य क्या है। मनुष्य तभी जागेगा जब वह जीवन का सत्य प्राप्त कर लेगा। जीवन की सत्य प्राप्ति के लिए मन की एकाग्रता आवश्यक है। एकाग्रता, त्याग और भोग के माध्यम से जीवन में आनंद प्राप्ति का साधन है।

समारोप :–आज के युगानुरूप विश्व कल्याण की चर्चा अधिक चलती है। यह केवल निरर्थक वार्तालाप होता है। उर्वशीकार ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से आधुनिक युग का पथप्रदर्शन किया है। उर्वशी पुरुरवा के प्रति समर्पित रही है। आज मनुष्य के जीवन में भोग की आसक्ति दिन–ब दिन बढ़ती जा रही है, जिसके परिणाम असंतोष, द्वन्द के रूप में उभर रहे है। मनुष्य को अपने अहं का त्याग करके अनासक्ति स्वीकृत करनी चाहिए। उर्वशी महाकाव्य की कथावस्तु आज के मनुष्य को सतह से ऊपरी उठाने के लिए, काम के वासनात्मक स्तर से प्रेम के आत्मिक स्तर तक उठने का संदेश देती है। यही मानव हित के लिए विश्व प्रेम का संदेश है।

संदर्भ :–(1)हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि–डॉ . सुरेश अग्रवाल–पृष्ठ सं–198–संस्करण 2006 (2)हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि–डॉ . सुरेश अग्रवाल–पृष्ठ सं–199–संस्करण 2006 (3)उर्वशी–दिनकर, अंक–3 पृष्ठ संख्या–34–अशोक प्रकाशन–2011 (4) उर्वशी–दिनकर, अंक–3 पृष्ठ संख्या–35–अशोक प्रकाशन–2011 (5) उर्वशी–दिनकर, अंक–3 पृष्ठ संख्या–57–अशोक प्रकाशन–2011 (6) उर्वशी–दिनकर, अंक–3 पृष्ठ संख्या–32–अशोक प्रकाशन–2011 **सहायक संदर्भ ग्रंथ** :–(1)दिनकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व–जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी–1984 (2)उर्वशी : संवेदना और शिल्प–सुशीला शर्मा–1976 (3)उर्वशी : उपलब्धि और सीमा–परिमल प्रकाशन–1967

Head of the Dept
ACS College Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

IJRAR

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Ref No : IJRAR/Vol 9 / Issue 3/ 737

To,
Dr. P.M.Bhumare
Publication Date 2022-07-31 06:24:41

Subject: Publication of paper at International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR).

Dear Author,

With Greetings we are informing you that your paper has been successfully published in the International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR) - IJRAR (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138). , Thank you very much for your patience and cooperation during the submission of paper to final publication Process. It gives me immense pleasure to send the certificate of publication in our Journal. Following are the details regarding the published paper.

About IJRAR	:	UGC and ISSN Approved - International Peer Reviewed Journal, Refereed Journal, Indexed Journal, Impact Factor: 7.17, E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138
UGC Approval	:	UGC Approved Journal No: 43602
Registration ID	:	IJRAR_251779
Paper ID	:	IJRAR22C1737
Title of Paper	:	
Impact Factor	:	7.17 (Calculate by Google Scholar) | License by Creative Common 3.0
DOI	:	
Published in	:	Volume 9 | Issue 3 | July 2022
Publication Date	:	2022-07-31 06:24:41
Page No	:	954-959
Published URL	:	http://www.ijrar.org/viewfull.php?&p_id=IJRAR22C1737
Authors	:	Dr. P.M.Bhumare

Thank you very much for publishing your article in IJRAR. We would appreciate if you continue your support and keep sharing your knowledge by writing for our journal IJRAR.

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)
E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138
IJRAR

Editor In Chief
International Journal of Research and Analytical Reviews - IJRAR
(E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

Indexing CiteSeer SSRN Academia.edu Scribd Mendeley publons

Scholarly Open Access, Multi-disciplinary, Monthly, Indexing in all Major Database & Metadata, Citation Generator

Certificate of Publication

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

The Board of

International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)

Is hereby awarding this certificate to

Dr. P.M.Bhumare

In recognition of the publication of the paper entitled

Published In IJRAR (www.ijrar.org) UGC Approved - Journal No : 43602 & 7.17 Impact Factor

Volume 9 Issue 3 July 2022, Date of Publication: 31-July-2022

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded

PAPER ID : IJRAR22C1737

Registration ID : 251779

EDITOR IN CHIEF

UGC and ISSN Approved - Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.17 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool) , Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS | IJRAR

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijrar.org | Email: editor@ijrar.org | ESTD: 2014

IJRAR | E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्कन्दगुप्त नाटक में सामाजिक चेतना

प्रा . डॉ . पी . एम भूमरे

सहायकप्राध्यापक

हिंदी विभाग

कला वाणिज्य एंव विज्ञान महाविद्यालय नगर

प्रस्तावना :

हर युगीन साहित्य रचनाकारों को प्रभावित करता है | यही कारण है कि , साहित्य को इतिहास भी कहाँ जाता है | जिस प्रकार इतिहास घटनाओं और प्रसंगों की साक्ष्य देता है , उसी प्रकार साहित्य भी मानव के भाव -भावनाओं की साक्ष्य देता है | किसी भी रचनाओं में युगीन प्रतिबिंब का दर्शन होता है | युग और साहित्य का एक अटूट रिश्ता है , जो एक से दूसरा अपूर्ण है | कहे तो एक ही सिक्के के दो पहलू है | एक पर दूसरा निर्भर रहता है | समाज के अंर्तमन की भाव - भंगिमाओं का प्रदर्शन साहित्य में अभिव्यक्त होता है | यह मनुष्य के भाव रूपी विचार साहित्य में गतिशील रहते है | रचनाकार जिस काल या युग में लेखन करता है उस कालरूपी स्थितियों एंव प्रसंगों का वर्णन साहित्य में निहित होता है | हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जो नव- जीवन का चित्र प्रस्तुत किया उसमें राष्ट्रीयता को प्रथम स्थान दिया | साहित्य में राष्ट्रीय विचारों की एक नई परंपरा का सूत्रपात हुआँ था उसे जयशंकर प्रसाद जैसे नाटककारों ने नए आयामों तक पहुँचाया | जयशंकर प्रसाद के नाटकों में विषय और शिल्प की दृष्टि से नाटक कला का उन्नत रूप परिष्कृत हुआ | डॉ जयनाथ नलिन कहते है कि , " प्रसाद ने अपने नाटकों में एक स्वस्थ संतुलित और स्वतंत्र परिवेश में मौलिक प्रतिभा से संपन्न बनाने में कार्य किया | "[1] प्रसाद ने अपने नाटकों में विशेष रूप से ऐतिहासिक घटनाओं का चयन किया है | उनके नाटकों के नायक सांस्कृतिक एंव सामाजिक आदर्शो की स्थापना करने का प्रयास करते है | उनके द्वारा रचित स्कंदगुप्त नाटक की कथावस्तु एंव घटनाओं के चक्र इतिहास से मिलते - जुलते है | सत्य और कल्पना , वास्तविकता और भाव - भंगिमाओं का संयोग उनके नाटक में है |

श्री जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के सधन वैश्य परिवार में 1946 को हुआ | उनके परिवार की सुँघनी साहू के नाम से प्रसिद्धि थी | प्रसाद के पिता श्री देवीप्रसाद साहू एक उदारमतवादी व्यक्ति थे परिणाम स्वरूप उनके घर पर साहित्य प्रेमी आते रहते थे | बालक प्रसाद की शिक्षा एंव दीक्षा घर पर ही होती थी परंतु दो वर्ष की पढ़ाई के बाद प्रसाद के जीवन - संघर्ष की शुरुवात हुई | अनेक कठिनाईयों में प्रसाद का व्यक्तित्व उभरकर सामने आया | प्रसाद स्वभाव से गंभीर एंव शांत प्रकृति के थे | जैसे - जैसे प्रसाद की उम्र बढ़ी वैसे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम उभरकर आए परिणाम स्वरूप अनेक नाटकों में सामाजिक चेतना अभिव्यक्त हुई है |

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

जयशंकर प्रसाद के नाटक में प्रमुख विशेषता ऐतिहासिकता रही है। इसका कारण है कि, प्रसाद युगीन राजनैतिक पराधीनता। प्रसाद पूर्व नाटककारों ने सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से जनजागृति का प्रयास किया। ततपश्चात आजादी प्राप्ति करने हेतु जनता में स्वाभिमान की भावना का उदय हुआ। इससे स्वाधीनता आंदोलन को एक दिशा मिली।

स्कंदगुप्त नाटक की रचना जयशंकर प्रसाद द्वारा 1928 में हुई। इस नाटक में प्रसाद के राष्ट्रीयता एंव संस्कृति के प्रति प्रौढ़तम विचार प्रस्तुत हुए। यह नाटक विदेशी आक्रमणकारियों से भारत को मुक्ति दिलाने हेतु रचा गया। प्रसाद के इस नाट्य रचना के पीछे दो उद्देश रहे है, एक है कि, आंतरिक शांति स्थापित करना तो दूसरा बाहरी आक्रमण से मुक्ति दिलाना। नाटक का नायक प्रसिद्ध विक्रमादित्य स्कन्दगुप्त है। स्कन्दगुप्त ने अपने जीवन में कई पराक्रम और वीरता प्राप्त की है। विदेशी आक्रमणकारियों से अपने देश की रक्षा करना ही स्कन्दगुप्त का साध्य है। इस नाटक में प्रतिनायक के रूप में सौतेला भाई पुरगुप्त है। स्कन्दगुप्त की वीरता और कार्य के आगे पुरगुप्त बहुत ही गौण पात्र प्रतित हुआँ है बल्कि स्कन्दगुप्त अपने पराक्रम से अपनी जनता में हौसला बढ़ाता है। इस नाटक के अन्य पात्र भी प्रसंगानुरूप अपनी भूमिका निभाते है। बंधुवर्मा, भटार्क, शर्वनाग, प्रपंचबुद्धि नाटक के पुरुष चरित्र है तो स्त्री पात्रों में देवसेना, विजया, अनन्त देवी, कमला, रामा आदि पात्र है। स्कन्दगुप्त की नायिका देवसेना है। यह एक आदर्श एंव धर्म परायणा स्त्री पात्र है। सहिष्णु वृत्ती, त्याग की मूर्ति, उदार वृत्ती, सहृदया आदि भावों से युक्त देवसेना के चरित्रगत विशेषता है। बल्कि मानसिक कुण्ठा एंव आत्मीय संघर्ष के भाव से युक्त विजया और अन्तत देवी यह पात्र कमजोर प्रतीत होते है। ईर्ष्यालु एंव हिंसा का समर्थन करने वाले यह दो स्त्री चरित्र इस नाटक में अभिव्यक्त होते है। नारी का सहज एंव कोमल स्वभाव प्रतित होता हुआ हम देखते है तो दूसरी ओर यह दोनों स्त्री पात्र कठोर हृदयी पीड़ादायक रूप में अभिव्यक्त हुए है। यह दोनों चरित्र हिंसा का समर्थन करते है। स्कन्दगुप्त नाटक में भारतीय एंव पाश्चात्य शैली का समन्वय हुआ है। नाटक के चरित्रों में मानसिक द्वन्द्व भी है तो रस व्यंजना की अभिव्यक्ति भी है।

साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रीत संबंध होता है, एक दूसरे के बिना इसकी कल्पना नही कर सकते। प्रसाद कालीन समाज में सामाजिक नियम एवं प्रथाएँ प्रचलित रही है। परिणाम स्वरूप समाज में वर्ण को महत्व था साथ ही साथ असंख्य जाति - उपजातियो के भेद भी थे। शादी - विवाह, खान - पान और व्यवसाय संबंधी भिन्न - भिन्न प्रथाएँ प्रचलित थी। अंग्रेजों के आगमन से जाति प्रथा के बंधन ढीलें हो चूंके थे परंतु यह उच्च जातियों तक ही सीमित रहे। गांधीजी के आगमन से विधवा - विवाह को प्रोत्साहन मिला साथ ही साथ पर्दा प्रथा रूढ़ि - वादी संकुचित दृष्टिकोण का भी विरोध हुआँ। " गांधीजी के अनुसार मनुष्य का नैतिक दृष्टिकोण अंतर्मन से प्रभावित होता है। पुरुष नारी की पवित्रता का नियंता नही है। "[2] धीरे - धीरे ही सही क्यों ना हो गांधीजी के प्रभाव से सामाजिक क्षेत्र में बदलाव शुरू हुआँ था। मनुष्य जाति के विकास के लिए सामाजिक व्यवस्था बन जाती है। इस समाज व्यवस्था में व्यक्ति और समाज का जीविकार्जन हो यही उद्देश था। कालांतर में चार वर्ण निश्चित हुए और इस वर्ण से ही समाज का ढाँचा बना। ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र इस प्रकार के वर्ण का नामकरण हुआ। व्यक्ति के स्वभाव और गुण कर्म के आधार पर समान अधिकार मिल गए। प्रारंभिक अवस्था में वर्ण भेद की समस्या नही थी बल्कि प्रसाद युग तक वर्ण भेद एक समस्या बन गई।

स्कन्दगुप्त नाटक में भी ब्राम्हण के कर्तव्य का बढ़े ढंग से वर्णन किया है | जैसे -

" सर्वे पि सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया |

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चि - द दः खमा - प्रियातु | "[3]

सभी के सुख की कामना करना यही सबसे पहला कर्तव्य माना गया है | नाटक के नायक ने यह माना है कि , ब्राम्हण यज्ञ - सम्पादन में क्रियामग्न रहे है | इस अवस्था में कोई विद्याध्ययन और ज्ञानार्जन करनेवाले मनुष्य को पीड़ा पहुँचता है तो उसे राजा दंडित कर सकता है | स्कन्दगुप्त नाटक में चारों वर्णों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का भी वर्णन किया है | क्षत्रियों को हरपल अपने देश के लिए मर - मिटने के लिए तैयार रहना चाहिए | स्कंदगुप्त नाटक का पात्र जयमाला पीड़ितों और अनाथों की रक्षा करने हेतु अपने प्रजारक्षणार्थ को क्षत्रिय अपना धर्म मानते है | " जयमाला के संवाद से क्षत्रियों में उनके धर्म देश हित का कल्याण ही सर्वोपरि माना गया है | "[4] क्षत्रिय नारियाँ भी युद्ध में प्रवीण होती थी | उन्हें भी युद्ध कला का अभ्यास होता था | यज्ञ और दान करने की वृत्ती क्षत्रियों में उपजत होती थी | कितनी भी कठीन परिस्थिति हो भीख माँगना क्षत्रियों में निंदनीय माना गया है | स्कन्दगुप्त नाटक का पात्र पर्ण - दत्त को देश की दुर्दशा और वीर - ह्रदय की विकलांगता देखी नही जाती | विरताओं के सहायता हेतु पर्ण - दत्त मदत की याचना करता है | पर्ण - दत्त कहता है कि , " मैं क्षत्रिय हूँ , मेरा यह पाप ही आपध्दर्म होगा | "[5] अपने धर्म का पालन करना चाहिए | यही एक निष्ठ का भाव स्कन्दगुप्त नाटक में अभिव्यक्त हुआँ है | स्कन्दगुप्त नाटक में वैश्य को समाज पोषक माना है | प्रसाद की दृष्टि से वैश्य यह अतिउत्तम समाज घटक है | वैश्य आर्थिक दृष्टि से संपत्र होते है | स्कन्दगुप्त का स्त्री पात्र विजया को श्रेष्ठ कन्या कहा गया है | शुद्र का कार्य समाज की सेवा करना है | "[6] शुद्र समाज के तीनों वर्णों की सेवा करके अपने जीवन की उपजीविका चलाता है | शूद्रों को तीनों वर्णों की सेवा करने के बावजूद भी हीन और अपमानजनक जीवन जीना पड़ता है | स्कन्दगुप्त नाटक में मुदगल के भी शूद्रों के सेवा कार्य का गुणगान गाता है |

जिस घर परिवार में दो - तीन पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते है उन्हें संयुक्त परिवार कहाँ जाता है | प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में संयुक्त कुटुंब पद्धति प्रचलित रही है | शिक्षा का बढ़ता प्रचलन , नए विचारों का प्रभाव स्वंतत्रता के विचारों से संयुक्त परिवार के विघटन की समस्या को और भी प्रोत्साहन मिला है | शहरीकरण , औद्योगिकिकरण नई अर्थव्यवस्था के परिणाम संयुक्त परिवार टूटने पर परिणत हुए है | प्रसाद के साहित्य में भी है संयुक्त परिवार के विघटन की समस्या अभिव्यक्त हुई है | भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का महत्व ही श्रेयस्कर रहाँ है | स्कन्दगुप्त नाटक में संयुक्त परिवार तोड़ने के प्रयास हो जाते है | जैसे कि " अनन्त देवी यह स्त्री पात्र संशयी एंव आत्माभिमानी रहा है | अपने स्वार्थ के लिए अनन्त देवी देवकी की हत्या करके अकेले अपने पुत्र पुरगुप्त के साथ राज्य का उपभोग करना चाहती है | सारा साम्राज्य हड़प करना चाहती है | "[7] अनन्त देवी के षड़यंत्र को स्कन्दगुप्त असफल बनाते है | परंतु स्कन्दगुप्त पुरगुप्त को राज्य का सम्राट बनाकर सयुंक्त परिवार के रीतिरिवाजों का पालन करंता है | कहने का तात्पर्य है कि , स्कन्दगुप्त की दृष्टि से सयुंक्त परिवार का कल्याण तो समाज और देश का कल्याण ही महत्वपूर्ण है | पुत्र को भविष्य के लिए सही पथ - प्रदर्शक बनाने का दायित्व माता - पिता पर होता है | पुत्र - पुत्री के प्रति किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिए इसका जिक्र स्कन्दगुप्त नाटक में हुआ है | कहाँ जाता है कि " अत्यधिक लाड़ - दुलार से बच्चे बिगड़ते है | स्कन्दगुप्त नाटक की कमला अपने पुत्र के यश कि कामना करती है | "[8] अपने पुत्र को देश की सेवा के लिए उपदेश करती है साथ ही अपना पुत्र कुमार्ग पर चलने पर निंदा भी करती है | माता - पिता के स्नेह से ही पुत्र - पुत्रियों का पथ प्रदर्शन होता है | अतः उन्हें उचित सही रास्ता चुनने में मदत करना चाहिए |

स्कन्दगुप्त नाटक में भ्रातृ - भगिनी प्रेम का एक आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत होता है। हर समाज में हमारे रिश्तों में सबसे ज्यादा प्रिय रिश्ता भाई - बहन का होता है। भारतीय संस्कृति में भाई - बहन का रिश्ता पवित्र बंधन है। राखी दूज यह त्योहार भाई - बहन के रिश्तें को दर्शानेवाला ही एक त्यौहार है। स्कन्दगुप्त अपने सौतेले भाई पुरगुप्त को राजगद्दी पर बिठाते है। स्वयं स्कन्दगुप्त राज सिंहासन के उत्तराधिकारी है फिर भी सौतेले भाई के प्रति भी एक उदार भाव अभिव्यक्त होता है। प्रसाद के नारी पात्र सयंम एंव प्रबुद्धता का परिचय देते है। कठीन परिस्थिति में भी अपना आपा नही खोते बल्कि धैर्य से संकट का सामना करते है। स्कन्दगुप्त नाटक का स्त्री पात्र देवकी एक संयम एंव प्रतिभावान पात्र है। देवकी प्रतिहिंसा को पाशविकता कहकर हिंसा का समर्थन नही करती। स्कन्दगुप्त के राज्याभिषेक के समय किसी भी प्रकार की हिंसा उसे बाध्य नही है। उसे राज्य में कदापि हिंसा स्वीकार्य नही है। देवकी अपने सेनापतियों को किसी भी चर - अचर जीव धारियों पर शस्त्र न चलाने का अनुरोध करती है। देवकी के मानव जाति के प्रति जो विर्चार है, वह बड़े संवेदनशील है। देवकी युद्ध के परिणामों से परिचित है।

प्राचीन काल से ही स्त्री जाति पर अन्याय - अत्याचार होते रहे है। शारीरिक मानसिक और बौद्धिक दुर्बलता की चक्की में महिलाओं का शोषण होता रहाँ है। स्कन्दगुप्त नाटक के स्त्री पात्र भी पुरुषों के अत्याचार का शिकार होते रहे है। परंतु स्कन्दगुप्त नाटक के स्त्री पात्र अन्याय - अत्याचार मौन होकर सहन नही करते बल्कि अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते है। स्त्री - पात्र अपनी रक्षा स्वयं करती है। अपनी बौद्धिकता का परिचय देकर पुरुष पात्रों को भी मात देती है। स्कन्दगुप्त के स्त्री पात्र केवल पुरुषों को दबाते या अन्याय करते ही नही बल्कि पुरुषों नई उर्जा प्रदान करने की भूमिका निभाते है। स्कन्दगुप्त की जयमाला बन्धु वर्मा को अपनी सेना ले जाकर युद्ध करने का आवाहन करती है। तब बन्धुवर्मा अपनी सेना के साथ सिंह विक्रम की सेना पर टूट पड़ता है। जयमाला बन्धु - वर्मा को युद्ध में सहायता भी करती है। जयमाला स्वंय दुर्ग के रक्षण करने की बात करती है। जयमाला एक सबल पात्र स्कन्दगुप्त नाटक में धैर्य और पराक्रम का परिचय देती है। जयमाला की सहायता करने पर बन्धु वर्मा युद्ध में जीत हासिल करता है। तात्पर्य यह है कि, स्कन्दगुप्त नाटक के स्त्री पात्र दुर्बल नही है। अपने दम पर अन्याय का दामन उखाड़ फेकने में समर्थ है।

स्कन्दगुप्त नाटक के पात्रों में समस्त मानव की मनोवृत्तियों का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। पात्रों के द्वारा मनुष्य के हृदय की विविध अनुभूतियाँ दर्शाएँ एवं लोका दर्शो का वहन हुआ है। आदर्शो की आड़ में स्कन्दगुप्त के पात्रों में सीमित वर्णन मिलता है। स्कन्दगुप्त के व्यक्तित्व में कर्तव्यपरायणता, वीरता, करुणा और उदारता जैसे सदगुण अभिव्यक्त होते है, स्कन्दगुप्त भी एक बंधुवर्मा विद्यमान मनुष्य है। परिणाम स्वरूप युद्ध या विलाप के प्रसंग पर मानसिक संघर्ष से चिंतित हो जाता है। नाटक के अंतिम दृश्य में स्कन्दगुप्त का देवसेना से संवाद होता है कि, " जीवन के शेष दिन कर्म के अवसाद में बचे हुए हम दुखी लोग एक - दूसरे का मुँह देखकर काट लेंगे। .... परंतु इस नंदन की वसंत श्री इरा अमरावती की शची, इस स्वर्ग की लक्ष्मी तुम चली जाओ - ऐसा मैं किस मुँह से कहू ? और किस वर्ज कठोर हृदय से तुम्हें रोकू ? "[9] ऐसी कठीन परिस्थिति में भी स्कन्दगुप्त अपना संयम नही खोता और दृढ़ता से डटे रहता है। युगीन दृष्टि से देखा जाएँ तो तत्कालीन राजनैतिक कोलाहल के वातावरण में प्रशासन करना किसी चुनौती थी। स्कन्दगुप्त ने अपने पारिवारिक संघर्ष और राजनैतिक स्थिरता के लिए धैर्य से कार्य किया है। स्कन्दगुप्त ने पारिवारिक संघटन को मजबूत बनाकर राष्ट्र की एकता के लिए प्रयास किया है।

इस देश में प्रधान को विशेष महत्त्व रहाँ है। भारत वर्ष की जनता प्रधान के प्रति विशेष आदर भाव रखती है। राजा के अभाव में प्रजा विभिन्न संकटों से ग्रस्त हो जाती है। राज्य और प्रशासन की व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके इसके प्रति राजा का दायित्व होता है। राजा ही घरेलू एवं आंतरिक संघर्षों से घिरा है तो राष्ट्र उन्नति की ओर नही बढ़ेगा। बल्कि अनेक विपत्तियाँ आने की संभावना होती है। सामाजिक संघटन ही राष्ट्र की उन्नति के लिए कारगर सिद्ध होता है। जैसे हम देखते है कि, स्कन्दगुप्त अपने पारिवारिक संघर्ष को पूर्णविराम देकर राष्ट्र की उन्नति हेतु प्रयास करता है। सत्ता संघर्षों का समाधान स्कन्दगुप्त ढूँढ लेता है जिससे वे राज्य की व्यवस्था सुचारू रूप से चलती

है | स्कन्दगुप्त नाटक में सत्ता के लिए संघर्ष है परंतु उसका हल भी प्रस्तुत किया है | जैसे " अनन्त देवी अपने पुत्र पुरगुप्त को युवराज पद चाहती है | पुत्र सत्ता के मोह से देवकी की हत्या करना देवसेना का साध्य है , अनन्त देवी देवकी को किसी भी प्रकार का मोह नही है | " देवकी का पुत्र स्कन्दगुप्त अपनी माँ की रक्षा करते हुए सौतेली माता के प्राणों की रक्षा भी करता है | सत्ता , पद , संपत्ति के लिए कोई भी मोह स्कन्दगुप्त को नही है | इसलिए स्कन्दगुप्त के व्यक्तित्व में राजा के विशेष गुण होने के बावजूद राज - पद का त्याग करता है | स्कन्दगुप्त को पद की लालसा का मोह नही है | परिवार में अधिकांश संघर्ष तो इसी कारण होते है | स्कन्दगुप्त नाटक के पात्रों त्याग , समर्पण , उदारता एवं धर्म परायणता की प्रव्रत्ति है | समस्त पात्र सामाजिक एंव राष्ट्र की उन्नति हेतु अपने संकुचित विचारों का त्याग करते हुए दिखाई देते है | स्कन्दगुप्त नाटक के पात्रों के सम्मुख समाज एवं राष्ट्र सर्वोपरि है | वर्तमान संकुचित एवं कल्पित विचारधारा को देखकर समाज एवं राष्ट्रीय एकता स्थापित करने हेतु स्कन्दगुप्त के समस्त पात्र हमारे सम्मुख एक नया आदर्श स्थापित करते है |

निष्कर्ष :

स्कन्दगुप्त नाटक प्रसाद के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है | जिससे इतिहास और कल्पना का प्रचुर एवं समृद्ध प्रयोग हुआ है | स्कन्दगुप्त नाटक में राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक प्रसंगों में हुई है | या कहे कि , राष्ट्रीय भक्ति प्रधान नाटक है | इस नाटक में देशभक्ति किसी व्यक्ति केंद्र में नही है | अपितु समस्त भारत वर्ष इस नाटक का केंद्र है | भारत भूमि की सेवा के लिए नाटक के पात्र स्वंय का बलिदान देने के लिए भी पीछे नही हटते | नाटककार का उद्देश है कि धार्मिक , आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से तत्कालीन समाज को संघटित बनाकर चेतना जागृति करना सामाजिक दृष्टि देखा जाएँ तो वर्णव्यवस्था , जातिव्यवस्था , स्त्री शिक्षा , पारिवारिक संघटन को नए दृष्टि से पात्रों में उदारवादी भाव अभिव्यक्त हुए है | स्कन्दगुप्त नाटक के समस्त पात्रों में आंतरिक संघर्ष होने के बावजूद राष्ट्रीय एवं सामाजिक एकता का नया आयाम प्रस्तुत हुआ है |

* संदर्भ

1 स्कन्दगुप्त - प्रसाद प्रकाशन , वाराणसी पृष्ठ सं 70

2 प्रसाद साहित्य में युग चेतना - डॉ लीलावती गुप्ता - पृष्ठ सं 127

3 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 106

4 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 36 - 70

5 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 118

6 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 34

7 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 55 , 56 , 132

8 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 61

9 स्कन्दगुप्त - पृष्ठ सं 54

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

ग्रन्थ सूचि

1 प्रसाद का स्कन्दगुप्त - प्रो पुरुषोंत्तमलाल विज़

2 हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

3 आधुनिक हिंदी नाटक - डॉ नगेंद्र

4 प्रसाद के नाटक स्वरूप और संरचना - डॉ . गोविंद चातक

5 हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ . माधव सोनटक्के

पुस्तक : स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी–मराठी कविता
संपादक : प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते
© : संपादक
प्रकाशक : **शैलजा प्रकाशन**
प्रकाशक एवं वितरक
57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर –11
Mob.: 8765061708, 9451022125
E-mail : shailjaprakashan@gmail.com
ISBN : 978-93-80760-97-1
संस्करण : प्रथम 2022
मूल्य : ₹ 725 /–
शब्द साज : शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक : अनिका डिजिटल, कानपुर

Swadhinta Andolan Aur Hindi-Marathi Kavita

by : Dr. Ranjit Jadhva

Price : Seven Hundred Twenty five Only.

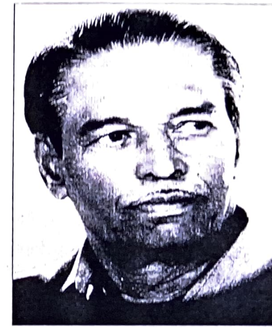

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

प्रसिद्ध भाषाविद स्मृतिशेष
डॉ. अंबादासराव देशमुख जी
को
सादर समर्पित

8. स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान 46
- डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव
9. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविताओं का योगदान 52
-प्र डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ
10. कवि माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप 58
-डॉ. ज्ञानेश्वर गंगाधर गाडे
11. स्वाधीनता आंदोलन और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य 63
- प्रा. डा. भगवान रामकिशन कदम
12. जंगे आजादी में हिंदी कलमकारों का योगदान 67
-डॉ. सूर्यकांत शिंदे
13. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 73
– प्रा. डॉ. पवार आर.एस.
14. स्वतंत्रता आंदोलन और हिंदी कविता 77
-डॉ. प्रणिता लक्ष्मणराव पाटील
15. राष्ट्रीय काव्यधारा और मैथिलीशरण गुप्त 81
– प्रा. डॉ. सुलभा शेंडगे
16. स्वाधीनता आंदोलन में छायावादी कवियों का योगदान 85
-डॉ. पठान जलाल खान
17. स्वाधीनता आंदोलन तथा हिंदी साहित्य 90
(सुभद्राकुमारी चौहान के संदर्भ में) – डॉ. हणमंत पवार
18. राष्ट्र प्रेम के अग्रज कवि : दिनकर तथा कुसुमाग्रज 95
-डॉ. विनय कुमार चौधारी
19. स्वतंत्रता आंदोलन काल के हिंदी कविता में व्यक्त सामाजिक तत्त्व 101
– डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील
20. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 106
– प्रो. डॉ. रणजीत जाधव
21. स्वतंत्रता आंदोलन एवं हिंदी कविता 112
– प्रा विभुते आर. व्हीं.
22. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता : विशेष संदर्भ भारतेंदु युग 116
– प्रा. मानखेडकर बी.एस.
23. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान 119
-डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
24. स्वाधीनता आंदोलन के कवि नाथूराम शर्मा शंकर 124
-डॉ. मुरलीधार अच्युतराव लहाडे
25. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 129
-डॉ. संजीव कुमार नरवाडे
26. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 135
– प्रा. बालाजी सूर्यवंशी
27. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय भाव संवेदना 141
-डॉ. सुभाष राठोड
28. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 148
– डॉ. बलवंत बी.एस.
29. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना 151
– प्रा. संतोष शिवराज पवार
30. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान 156
– प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
31. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता 161
-डॉ. वनिता कुलकर्णी
32. आधुनिक चेतना के विकास में स्वच्छंदतावादी कविता का योगदान 167
-प्रा. डॉ. कदम एस.एस.
33. स्वाधीनता आंदोलन में ग़ज़लकार कैफ़ी आजमी का योगदान 171
(सरमाया के संदर्भ) -डॉ. जहीरुद्दीन र. पठान
34. स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की भूमिका 175
– प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे
35. मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना 182
– डॉ. वडचकर शिवाजी
36. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कविता 188
– डॉ. बालाजी भुरे
37. स्वाधीनता आंदोलन के सजग शिपाही माखनलाल चतुर्वेदी 196
-डॉ. मुकुंद कवडे

ग़ज़लकार ने ठान लिया है कि किसी भी हाल में अब देश को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद कराना है। अब गुलामी को देश में पनाह नहीं मिल सकती, क्योंकि देश के सपूत जाग गए हैं। 'जेल के दर पर' ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं -

'मिल नहीं सकती वतन में अब गुलामी को पनाह
खार व खस भी बीजलियों पर गर्म करते हैं निगाह।'[05]

कैफ़ी आजमी वतन की आज़ादी के लिए अपनी जान की कुर्बानी देने के लिए भी तत्पर हैं। चाहे कुछ भी हो जाए लेकिन गुलामी के निशान मिटा देने हैं और आज़ाद होकर ही रहना है। 'आवाज़ की शिकस्त' ग़ज़ल की ये पंक्तियाँ हमारे अंदर भी वतन पर मर-मिटने का जज़्बा उत्पन्न कर देती हैं –

'वतन के लिए जाँ गँवाने चला हूँ
निशान-ए-गुलामी मिटाने चला हूँ
कड़ी झेल लूंगा मसाइब सहूँगा
रहूँगा तो आज़ाद होकर रहूँगा।'[06]

कैफ़ी जी अपनी ग़ज़ल 'आखिरी मर्हलः' में देशभक्त वीरों, भारत के पराक्रमी सपूतों शुजाअ, हैदर अली, टिपू सुलतान, गुरु नानक जी, रणजीत सिंह आदि के शोर्य और पराक्रम का हवाला देकर देश के नौजवानों में देशभक्ति के भाव भरना चाहते हैं –

'हिसार बाँधे हुए तेवरियाँ चढ़ाये हुए, खड़े हैं हिन्द के सरदार सर उठाये हुए
बढ़े है झेले हुए कैदो बन्द के आज़ार, उठे हैं जंगे खिलाफत के आज़माये हुए
शुजाअहैदर व टीपू की गोद के पाले, दिलेर नानक ओ रंजीत के सिखाये हुए।'[07] 10 मई,2002 को कैफी यह गुनगुनाते हुए इस दुनिया से चल दिए –
"ये दुनिया, ये महफिल मेरे काम की नहीं।"

संदर्भसूची –

1. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 09
2. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 14
3. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 19
4. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 207
5. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 51
6. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 52
7. सं. शाहिद माहुली – सरमाया : कैफ़ी आज़मी समग्र, वाणी प्रकाशन दिल्ली, पृ. सं. 111

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर
महाविद्यालय, उमरी। ज़ि. नांदेड।
मो. 9922532352
ई-मेल : misbah271208@gmail.com

34

स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की भूमिका -

प्रा . डॉ . पी . एम. भुमरे

प्रस्तावना : -

बहुमुखी प्रतिभा के धनी माने जाने वाले प्रमुख कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी का नामोल्लेख होता हैं | हिंदी की काव्यधाराओं में एक राष्ट्रीय काव्यधारा प्रमुख रही हैं , चतुर्वेदी के समय में जो परिस्थितियाँ थी , परिणामस्वरूप उससे सामाजिक अंतर्मन व्यथित हो उठा था | जिसके परिणाम स्वरूप चतुर्वेदी की कविता प्रभावित हुए बिना नही रही | इनका कोमल हृदय सामंती और शोषण की व्यवस्था देखकर व्यथा से भर गया | इसी कारण इनकी कविताओं में कभी - कभी शिव का सा प्रलयंकारी तांडव नृत्य का दृश्य अभिव्यक्त हो जाता हैं | सामाजिक शोषण और राजनैतिक पराधीनता देखकर उनकें अंतर्मन का स्वाभिमान और पुरुषार्थ जाग जाता हैं | इसी स्वाभिमानी प्रवृति का नाम ही हैं , माखनलाल चतुर्वेदी |

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन -

राष्ट्रीय एंव स्वाधिनता कें आंदोलन कें काव्य में समूची राष्ट्रीय भावना से युक्त एक भारतीय आत्मा महापुरुष का सदियों बाद जन्म होता हैं | एक उर्ज स्वित आत्मा और बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार का जन्म 4 अप्रैल 1889 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिल्हें के बावई नामक गाँव में हुआँ | इनके पिता का नाम पंडित नन्दलाल चतुर्वेदी था जो पेशे सें अध्यापक थें | माता श्रीमती सुन्दरबाई थी जो एक साधारण सामान्य परिवार से सुशील एंव पढ़ी- लिखी थी | इनके संस्कारों कें परिणाम स्वरुप ही माखनलाल चतुर्वेदी धार्मिक , आस्तिक, कर्म निष्ठा , राष्ट्र प्रेम आदि से सर्वगुण संपन्न बने | बचपन से ही चतुर्वेदी कुशल और चंचल स्वभाव के थे | तिमरनी गाँव से उनकी शिक्षा प्रारंभ हुई जो मिडिल तक थी | बाद की शिक्षा के लिए उन्हें जबलपुर आना हुआँ , वहाँ पर राष्ट्रीय क्रांतिकारी और राष्ट्र नेताओं से उनका परिचय हुआँ | यही से उनके मन में क्रांति कें विचार अंकुरित हुए जो आगे चलकर एक क्रांतिकारी दल कें सदस्य बनकर क्रांतिकारी कार्य करने लगे | अपने कोमल हाथों में पिस्तौल पकड़कर क्रांति कें समस्त आंदोलनों में भाग लेने लगे | पश्चात सन 1904 में उन्होंने कविताएँ लेखन शुरू किया और उनकी कविताएँ भी प्रकाशित होने लगी | 1907 में वे खंडवा में अध्यापक बन गए | लोगों के बिच में वे एक कवि एंव क्रांतिकारी के रूप में पहचाने जाने लगें |

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

उनकें मान- सन्मानो में वृध्दी हुई परिणाम स्वरूप उनका अध्यापकीय कार्य उन्हें छोटा महसूस होने लगा | अतः उन्होंने यह तय कर लिया कि अध्यापकीय सेवा का त्यागपत्र देकर उन्होंने पूर्ण रूप से राष्ट्रीय आंदोलनों में स्वयं को संमिलित किया | जिसका परिणाम उनकें द्वारा रचित काव्य और अन्य साहित्य पर भी राष्ट्रीयता का प्रभाव रहा | चतुर्वेदी जी प्रभा नामक पत्रिका का सम्पादन करके निर्भीकता से राष्ट्रीय चेतना का परिचय करते है | कुछ दिनों के बाद राष्ट्रीय निर्भीक विचारों का एक प्रमुख पत्र बन जानें से ब्रिटिश सरकार की आँखों में बुरी तरह खटकने लगा | एक पत्रकार , प्रतिभाशाली कवि , राष्ट्रीय नेता और स्पष्ट प्रवक्ता के रूप में चतुर्वेदी की प्रसिद्धी बन गई | परिणाम स्वरूप ब्रिटिश सरकार नें सन 1921 को इनकें विरुद्ध राजद्रोह का आरोप लगाकर कैद में डाल दियाँ | इस प्रकार की उनकें जीवन में कई बार जेल की यात्रा उन्हें करनी पड़ी | उन्होंने किसी ना किसी रुप में अपना साहित्य लेखन और राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सहभागिता दर्ज की हैं | ऐसे एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार एंव क्रांतिकारी चतुर्वेदी की मृत्यू 30 जनवरी 1967 को हुई |

स्वाधिनता आंदोलन और माखनलाल चतुर्वेदी :-

माखनलाल चतुर्वेदी का आंतरिक व्यक्तित्व और प्रभाव भीष्म पितामह कें समान कहाँ जा सकता हैं | उनकें साथ कई दैवीय चमत्कार भी जुड़े हुए हैं , जो विशुद्ध रूप से मानवीय धरातल से संबंधित हैं | हरिकृष्ण प्रेमी उनके संदर्भ में कहते हैं , " यह तो आठों पहर कवि रहने वाले प्राणी हैं , चाहे गांधीजी कें अहिंसात्मक आंदोलन में भाग , चाहे क्रांतिकारी दल का सहयोग हो चाहे साहित्य कें क्षेत्र में कार्य हो , किंतु सर्वदा मुख्य रूप से कवि रहें "[1] उन्होंने जो भी कार्य किया , इसकें लिए कई रियासतों कें राजा - महाराजाओं ने इन्हें धन देकर सन्मानित करने का प्रयास भी किया | जीवन में किसी पद , या धन के मोह में वे नही पड़े | मिलने वाले मान एंव सन्मान को उन्होंने ठुकराया हैं | उपर्युक्त उनका विचार यही दर्शाता हैं कि , एक राष्ट्र प्रेमी , संवेदनशील कवि किस प्रकार सभी मोह, माया जंजाल से मुक्त रहकर राष्ट्रीय कार्य कर सकता हैं |

कवि के रुप में इनको अधिक प्रसिद्धि मिली परिणामस्वरूप इनका नाम काव्य के रूप में सर्वाधिक लिया लिया जाने लगा | उनकी उपलब्ध कृतियाँ निम्नता से हैं - 1 हिमकिरीटनी 1943 , 2 हिमतरंगिणी 1946 , 3 माता , 4 युगचरण , 5 वेणुलो को गूंजे धरा , 7 धूम्र वलय , 8 बीजुरी काजल आँज रही , 9 मरण ज्वर आदि |

इन सभी काव्य संग्रहों में विषय की वैविध्यता हैं | उनकी कविताओं में देश की राष्ट्रीय समस्याओं का भाव हैं तो दूसरा युगीन राजनीति का वर्णन भी हैं | प्रेम भावना , भक्ति- भाव और राष्ट्रीय आहुती में उनका काव्य प्रत्यक्ष रूप में विचारणीय हैं | स्वंय के जान की परवाह न करते हुए वे कई बार जेल में गए | उनके काव्य का एक बहु आयामी प्रबल स्वर बलिदान - भावनाओं का रहाँ हैं | परिणामस्वरूप स्वाधिनता आंदोलन की चेतना राष्ट्रीय संघर्ष में डटकर रहना यही उनकें काव्य की विशेषता हैं | कवि के अनुसार

" तेजस्विता राष्ट्र की जननी है , जो हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है आज भी कल भी "[2]

स्वाभिमान की भावना हर एक में होनी चाहिए इसका वे प्रतिपादन करते हैं | उनका विश्वास हैं कि , त्याग करना आवश्यक होता हैं | हम अपने सामाजिक उत्थान के लिए बलिदान नही देंगे तो सामाजिक सुधार संभव नही हैं | अपने देश वतन की रक्षा के लिए त्याग और बलिदान यह दो भाव होना आवश्यक हैं | इनके अभाव में हम अपनी और अपने देश की रक्षा कर पाने में सशक्त नही होंगे, इसलिए अपनी कविता में वे कहते हैं कि ,

" मातृ भूमि हैं उसकी जिसको उठ जीना आता हैं
पहन भूमि हैं उसकी , जो क्षण - क्षण गिरता जाता हैं
मैंने मिट जाने में सीखा हैं जग में हरियाना
मेरी हरियाली दुनियाँ है मिट्टी में मिल जाना "[3]

माखनलाल चतुर्वेदी के व्यक्तित्व में राष्ट्रीय भावना के प्राचुर्य के कारण ही यह राष्ट्र भाव समन्वित हुआँ हैं | वह राष्ट्र उपासना को ही अपना आराध्य मानते हैं | राष्ट्र देव में ही अपने ईश्वर के दर्शन कर लेते हैं | कवि की भक्ति का परिणाम ही है कि , राष्ट्रीयता का प्रभाव उनपर रहाँ है | भारत भूमि को चतुर्वेदी अपनी उपासना और आराध्य देवता मानते है जैसे -

" हो मुकुट हिमालय पहनता ,
सागर जिसके पद धुलवाता
यह बंधा बेड़ियों में मंदिर
मस्जिद गुरुद्वारा मेरा हैं |"[4]

माखनलाल चतुर्वेदी की यह कविता की पंक्तियाँ पढ़कर उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का पता चलता हैं | उन्होंने अपनी इस कविता में सामाजिक समता और सदभाव को आवश्यक माना है | उनके मता नुसार ही यह भारत भूमि अंग्रेजों के बंधनों से आझाद होने के लिए राष्ट्रीय एकात्मता का प्रबलता से पक्षधर है | जो देश के लिए मर मिटना चाहता हैं | वही प्रभु की आराधना का सच्चा सेवक है| प्रभुभक्ति और देशभक्ति एक - दूसरे के परस्पर पूरक हैं | देश भक्त त्याग और बलिदान से डरते नही है | परिणाम स्वरूप राष्ट्र देवता जंजीरों से आझाद करने के लिए अपना सिर हथेली पर रखकर शहीद हो जाते है | देश को बलशाली बनाने के लिए समर्पण का रास्ता अपनाते हैं |

जैसे - मैं बलि का गान सुनाती हूँ ,
प्रभु के पथ की बन फकीर
सिर पर पाग , आग हाथों में ,
रख पानी का घड़ा | "[5]

कवि का अधिकांश जीवन राष्ट्रीय आंदोनलनों में ही व्यतीत हुआँ है | परिणाम यह है कि स्वंतत्रता सेनानी की भूमिका निभाई है | हाथों में पिस्तुल लेकर उन्होंने क्रांति का आवाहन किया है | उन्हें हिंसा कदापि मान्य नही है | इसलिए गांधीजी के अहिंसा आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई | जीवन और जवानी की सफलता वे इसी में मानते है कि , राष्ट्र हित मे बलिदान देना -

" द्वार बलि का खोल चल सुडोल कर दे ,
एक हिमगिरी एक सिर का मोल कर दे ,
रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी ?
जाँच कर तू सीस दे - देकर , जवानी | "[6]

सच्चे देश प्रेमी की यही पुकार होती हैं कि , बलिदान देने से कभी पीछे नही हटते | गांधीजी के प्रति उनकी अटूट निष्ठा थी , यही कारण हैं कि , हिंसा का समर्थन करने वाला कवि गाँधीजी के प्रभाव से अहिंसा का महत्व बताते है | इतना ही नही कवि के जीवन का अंग ही अहिंसा और सत्य बन गया हैं | उनकी ' बयान ' नामक कविता में गांधीजी ने जो सत्याग्रह और अहिंसा के विचार बताए है , उनकी पुर्नप्रस्तुति की है , जैसे -

" आज हिंसक असहकरिता है
मेरे जीवन का धर्म | "[7]

इतना ही नही जब उनके द्वारा शस्त्र चलाया गया था , जिसका परिणाम किसी की जीवित हानी करके स्वतंत्रता प्राप्त करना उन्हें कदापी मान्य नही था | कवि ने ' सिपाही ' नामक कविता में बिना शस्त्र की क्रांति का आवाहन किया है | स्वंय कवि द्वारा निम्न प्रकार से इसकी घोषणा की जाती हैं | जैसे -

"पलट जाऐ चाहें संसार
न लूँगा इन हाथों में हथियार"[8]

कवि सत्य का आग्रही है , स्वयं इसका अनुकरण करता है | सत्य के पथ से हटकर उसे क्रांति नही चाहिए | कवि की करनी और कथनी में कोई भी अंतर नही है | हिंसा और घृणा करने और फैलाने वालों को कवि ने फटकार लगाई है | कवि की मान्यता है कि , अत्याचारी कोई भी हो वह त्याग और पौरुष का प्रतीक नही है | भारत मे ब्रिटिशों ने कई वर्षो से अन्याय - अत्याचार किए थे | ब्रिटिशों का साम्राज्य ही ऐसा था कि , यहाँ का धन अपने देश की उन्नति के लिए ले जाना | परिणाम स्वरूप अंग्रेजों द्वारा कुछ सुधार भी हुए परंतु अधिकतर आर्थिक शोषण ही हुआँ है | गांधीजी की सर्वव्यापी सांस्कृतिक राष्ट्रीय दृष्टि थी | ब्रिटिशों के विरुद्ध गांधीजी ने जब शंख नाद किया तो माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में भी आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की गई | उनके द्वारा लिखित 1929 में ' युग पुरुष ' नामक कविता में गांधीजी का उत्साह बढ़ाने हेतु निम्नता से प्रस्तुति की गई -

" उठ उठ तू ओ तपोमय जग उज्ज्वल कर ,
गूँजे तेरी गिर कोटी भवनों में घर घर ,
और
उठ ओ युग अमर सांस कृति की नव आशा
उठो ओ यशों विभूति प्रेरणा की अभिलाषा | "[9]

कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से सामान्य जन को जागृत करने का कार्य किया है | गांधीजी के आंदोलनों में सहभागिता बढ़ाने हेतु अहिंसा आंदोलन के माध्यम से जन की मानसिकता को तैयार करने में भूमिका- निभाई है| "युग का नायक युग के परिवर्तनों से आँखे मूँदकर अपनी कला को पुरुषार्थमयी नही रख सकता|"[10] हिमकिरीटनी नामक काव्य में कवि द्वारा कवि के कर्म और उत्तरदायित्व की ओर संकेत किया है| चतुर्वेदी ने देश सेवा के लिए राजनीति और साहित्य का माध्यम चुना उसकाल में चारों ओर ब्रटिश शासन का साम्राज्य स्थापित हुआँ था| देश के विभिन्न देशप्रेमी और संगठन दुख, दैन्य, अत्याचार मुक्ति के लिए आंदोलन चला रहें थे| देश को स्वतंत्र करने के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने लगे थे| अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के कुवक्र का शिकार कई क्रांतिकारी हो रहें थे| चतुर्वेदी का काव्य भी इस अंग्रेजों के कुचक्र काशि कार हुआँ| इन्हें भी कई बार जेल में जाना पड़ा अंग्रजो द्वारा कई प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए थे| परिणाम स्वरूप चतुर्वेदी के काव्य में भारत माता की वेदना की अभिव्यक्ति हुई है| जैसे -ग्रेजों के कुचक्र का शि

" हथियार नलों की हथकड़ियाँ , रोलट का हिय में घाव लिऐ |
डायर से अपने लाल कटा , कहती थी आँचल लाल किऐ |"

चतुर्वेदी की दृष्टि से उदारवादी राष्ट्रीय नेताओं की कड़ी निंदा की गई | परिणाम जनरल डायर के अत्याचार का वर्णन और रोलट अँक्ट का विरोध काव्यों के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ हैं | कवि ने अपनी हर कविताएँ राष्ट्रीय भावना से युक्त अंग्रेजों का प्रचंड विरोध किया है | भारतीय समाज की दयनीय अवस्था के लिए किस प्रकार अंग्रेजों की षडयंत्रकारी और दमनकारी नितियाँ सहायक है , इसके हर एक पक्ष का उदघाटन चतुर्वेदी के काव्य में हुआँ है | भारतीय जन को ब्रिटिश साम्राज्य में अत्याचार और दमन का शिकार होना पड़ा है | इसके जीवंत चित्र के नमूने प्रस्तुत किए हैं | स्वाधिनता आंदोलन में कवि की सहभागिता भी रही है | परिणाम स्वरूप कवि को कई बार जेल में बंद किया गया था | जेल की विभीषिका का वर्णन उन्होंने किया है | डाकू , चोर , बदमाश लुटेरों के बिच में कवि भी आधा पेट भरे जल में जीवन व्यथित कर रहें थे | जीवन पर अनेक पाबन्दियाँ लगाई गई है | कवि अपने अंतरात्मा की आवाज दबा नही सके | वह कविता के माध्यम से दबी भावनाएँ अभिव्यक्त करते है -

Head of the Dept.
ACS College Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded

" क्या ? देख न सकती जंजीरो का गहन हथकड़ियाँ क्यों ? यह ब्रिटिश राज्य का गहन गिट्टी पर उँगलीयों के लिखे हैं गान |

मैं मोट खिंचता लगा पेट पर जू आ

खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुआँ | "[11]

कवि को जब जेल में बंद किया जाता है तब कैद खाने कि अन्तर्व्यथा को वे व्यक्त करते है | उपर्युक्त पंक्तियों में यही भाव अभिव्यक्त हुआँ है | कवि को विश्वास भी हैं कि , एक दिन अंग्रेजों से मुक्ति मिलेगी | स्वातंत्र्य पूर्वकाल में अनेक कवियों की आवाज दबाने की कोशीश की गई | फिर भी अनेक काव्य के द्वारा अपने आक्रोश को व्यक्त करते रहें | अंग्रेजों की भर्त्सना की जाती थी | माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने एक कविता की पंक्ति में अपने असंतोष तीव्र शब्दों में अभिव्यक्ति दी है -

" पापी शासन पर अप्रियता उपजना श्रुति सम्मत है ,

इसलिऐ जालिम पर ममता न हो यही मेरा मत है | "

नौकरशाह भी एक आदमी थे परंतु वे अपनी इंसानियत भूल चुके थे | साम्राज्य विस्तार में उनकी मानवता परे हो चूँकि थी | दुर्बल मनुष्यता पर वे अपने दमनकारी नीतियों से अत्याचार करते थे | यही कारण है कि , कवि की द्रष्टि नौकरशाहओं के जुल्म पर पड़ी हैं "मेरा विश्वास प्राकृतिक राज्य हमारा नष्ट किया ,

जुल्मी नौकरशाही शासन हुआँ , हमे पद भ्रष्ट किया | "

वस्तुतः ऐसा कह सकते हैं कि, माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय भावना का वर्णन बड़ा ही सटीक तरीके से किया गया है |

निष्कर्ष :-

माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य प्रवेश जिस परिवेश से हुआँ उस समय कई काव्यधाराएँ प्रचलित थी | अपने आस - पास का परिवेश देखकर संवेदनशील कवि का हदय आकुल होता है कवि ने देखा भी है और स्वयं कैदखाने में जाकर कैदी के वेदना की पीड़ा भी झेली है | किस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य भारत मे फैला है और अपने दमनकारी नीतियों से जनता पर अत्याचार करता है | इससे प्रेरित होकर कवि का राष्ट्र प्रेम जाग उठा और अपने हदय की व्याकुलता कविता के माध्यम से भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित करता है | पुष्प की अभिलाषा , पर्वत की अभिलाषा , मरन त्योहार, सिपाही, युग परुष आदि कविताओं द्वारा कवि का राष्ट्र प्रेम और स्वाभिमान की भावना अभिव्यक्त हुई है | माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीयता का थोड़ा सा अभाव है परंतु राष्ट्रीय जागरण की चेतना प्रबल है | राष्ट्र के प्रति अनन्य प्रेम का भाव उन्होंने व्यक्त किया है | स्वाधिनता संग्राम में कवि ने स्वयं एक सेनानी बनकर कार्य किया ही परंतु अपने योगदान से समस्त भारतीयों को भी प्रेरित किया है |

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि, गांधीजी के अहिंसा आंदोलन में युगीन चेतना और व्यापक मुखर रूप देने का कार्य माखनलाल चतुर्वेदी जी ने किया है |

संदर्भ :-

1 हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि - डॉ . सुरेश अग्रवाल पृष्ठ - 44
2 राष्ट्रीयता की आवश्यकता - साप्ताहिक हिंदुस्तान - 8 अक्टूबर माखनलाल चतुर्वेदी
3 हिमकिरीटनी - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 25
4 हिमकिरीटनी - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 28
5 हिमकिरीटनी - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 40
6 हिमकिरीटनी - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 16
7 आधुनिक कवि भाग - 6 पृष्ठ- 11
8 चतुर्वेदी रचनावली भाग- 6 श्री कांत जोशी पृष्ठ - 18
9 माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्ति और काव्य- पृष्ठ -117
10 हिमकिरीटनी - आत्म निवेदन -माखनलाल चतुर्वेदी पृष्ठ -18
11 कैदी और कोकिला - काव्य - माखनलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 44

संदर्भ ग्रंथ :-

1 माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्ति और काव्य - डॉ क्रांति कुमार शर्मा
2 श्री माखनलाल चतुर्वेदी एक अध्ययन - डॉ . रामाधार शर्मा
3 माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व और कृतित्व -प्रेम नारायण टण्डन
4 आधुनिक हिंदी कवि - डॉ सुरेश अग्रवाल

सा . प्राध्यापक
हिंदी विभाग
कला , वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय शंकरनगर
मो . नं 9881641369